प्रस्तुतकर्ता
संजय भारती
असिस्टेंट प्रोफेसर – समाजशास्त्र
राजकीय महाविद्यालय जक्खिनी वाराणसी

विषय- समाजशास्त्र
नई शिक्षा नीति – 2020
इकाई – प्रथम
बी.ए. - प्रथम सेमेस्टर (माइनर एंड मेजर)
पुस्तक - समाजशास्त्र के मूल तत्व एवं अवधारणाएं
उपशीर्षक- आरंभिक समाजशास्त्र की विशेषताएं

स्वघोषणा

(disclaimer/ self-Declaration)

यह सामग्री विशेष रुप से शिक्षण और सीखने को बढ़ाने के शैक्षणिक उद्देश्यों के लिए है।आर्थिक /वाणिज्यिक अथवा किसी अन्य उद्देश्य के लिए इसका उपयोग पूर्णता प्रतिबंधित है। सामग्री के उपयोगार्थ इसे किसी और के साथ वितरित, प्रसारित या साझा नहीं करेंगे और इसका प्रयोग व्यक्तिगत ज्ञान की उन्नति के लिए ही करेंगे। इस कंटेंट में जो जानकारी दी गई है वह प्रमाणित है और मेरे ज्ञान के अनुसार सर्वोत्तम है।

" The content is exclusively meant for academic purpose and for enhancing teaching and learning. Any other used for economic / commercial purpose is strictly prohibited the users of the content shall not distribute, disseminate or share it with anyone else and its use is restricted and advancement of individual knowledge. The information provided in this e-content is authentic and best as per my knowledge."

आरंभिक समाजशास्त्र की विशेषताएं

हरबर्ट मरक्यूज ने कहा समाजशास्त्र के उदय के पहले सामाजिक मामलों की चर्चा सामाजिक दर्शन में होती थी। परंतु समाजशास्त्र के आ जाने के बाद सामाजिक मामलों की चर्चा समाजशास्त्र में होने लगी जो कि अधिक प्रमाणित और प्रभावशाली था। क्योंकि-

1. सामाजिक दर्शन की पद्धति चिंतन की थी और समाजशास्त्र की पद्धति प्रमाणीकरण की थी।

2. सामाजिक दर्शन का कोई निश्चित विषय वस्तु नहीं था और समाजशास्त्र एक निश्चित विषय वस्तु के आधार पर कार्य कर रहा था।

3. सामाजिक दर्शन ज्ञान के लिए ज्ञान की चर्चा करता है और समाजशास्त्र आरंभ से ही उपयोगितावादी था।

टी.बी. बोटोमोर ने कहा आरंभिक समाजशास्त्र वर्तमान समाजशास्त्र से भिन्न था। यह समाजशास्त्र अनेक विशिष्टता वाला था जो कि इस प्रकार है-

1. आरंभिक समाजशास्त्र विश्वकोश जैसा था। सभी क्षेत्रों का अध्ययन करना चाहता था।

2. समाजशास्त्र में वैज्ञानिक पद्धति पर बहुत अधिक बल दिया जाता था। यह अपने को प्रत्यक्षवादी कहता था।

3. आरंभिक समाजशास्त्र तुलनात्मक था यूरोप के विद्वान प्रत्येक घटना की तुलना करते थे।

4. आरंभिक समाजशास्त्र उद्विकासवादी था इसमें प्रत्येक घटनाओं के लिए उद्विकास के नियमों को लागू किया।

5. आरंभिक समाजशास्त्र संरक्षणवादी था अगस्त काम्ट ने पूंजीवाद का समर्थन किया काम्ट ने कहा क्रांति की आवश्यकता नहीं है शांतिपूर्ण ढंग से समाज में विकास हो सकता है।

टी.वी. बॉटमोर के अनुसार वर्तमान समाजशास्त्र बदल गया है अब यह सामाजिक आंदोलन और क्रांतियों का अध्ययन करने लगा है। इसने समझ लिया है कि केवल वैज्ञानिक पद्धति के आधार पर ही संपूर्ण समाज का अध्ययन करना संभव नहीं है। इसलिए अनेक नवीन अध्ययन की पद्धतियों को समाज के अध्ययन में स्थान देकर इस विषय को अधिक उपयोगी साबित करने लगा है।

संदर्भ ग्रंथ-

1.हुसैन,मुजतबा, 2012, समाजशास्त्री विचार, ओरियंट ब्लैक स्वान, प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली।
2. मुखर्जी, रविंद्र नाथ, 2000, सामाजिक विचारधारा, विवेक प्रकाशन, जवाहर नगर, दिल्ली।
3. अग्रवाल, डॉ. जी. के., नवीन संस्करण, 2017, समाजशास्त्र, बी. ए. तृतीय वर्ष, यस. बी. पी.डी. पब्लिकेशन हाउस,आगरा।
4. रावत, हरीकृष्ण, 2005, समाजशास्त्री चिंतक एवं सिद्धांतकार, रावत पब्लिकेशन, नई दिल्ली।
5. दोस्ती, यस. एल., 2010, आधुनिक समाजशास्त्री विचारक, रावत पब्लिकेशन, नई दिल्ली।
6.रावत, हरीकृष्ण, 2015, उच्चतर समाजशास्त्रीय विश्वकोश, रावत पब्लिकेशन, नई दिल्ली।